खून फल: संरक्षण तथा प्रवर्धन

खून फल या रक्त फल एक सदाबहार, बहुवर्षीय काष्ठीय लता है, जो उष्णकटिबंधीय वनों में बड़े पेड़ों का सहारा लेकर बढती है। इसके फल का प्रयोग न केवल खाने के लिए बल्कि उससे मिलने वाले नैसर्गिक रंग के लिए किया जाता है। इस प्रजाति के फलों का रस सुर्ख लाल रंग का होता है, इसलिए इसका यह नाम पड़ा है। यह प्रजाति अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों तथा उत्तर - पूर्व भारत में पाई जाती है।

एक नव अंकुरित पौधे का तना चिकना व हरे रंग का होता है, जबकि एक पूर्णतः विकसित पौधे का तना चिकना या रोयेंदार हो सकता है। विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं में नव अंकुरित पौधे में पत्तियाँ नहीं पायी जाती हैं। वृद्धि के साथ - साथ पत्तियाँ भी आने लगती हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह प्रजाति अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों की जलवायु में साल में एक से अधिक बार फल देती है, हालाँकि इसका मुख्य मौसम अप्रैल से जुलाई तक होता है। इसका पुष्पक्रम 35 - 40 सेमी लंबा होता है तथा मुख्य तने या शाखाओं से निकलता है। फूल एकलिंगीय होते हैं और उनमें छः पंखुड़ियाँ होती हैं। इन छोटे से फूलों का रंग हल्का हरा होता है। फल लंबे या अंडाकार होते हैं और गुच्छों में लगे होते हैं, हालाँकि एक पुष्पक्रम के सारे फल एक साथ नहीं पकते। विकास की विभिन्न अवस्थाओं में फलों का रंग हल्के हरे से सुर्ख लाल और फिर गहरा लाल – काला हो जाता है। छिलके के अंदर एक बड़ा बीज और उससे चिपका लाल रंग का रसीला गूदा होता है। एक फल का वजन 13 से 20 ग्रा तक होता है।

रक्त फल को न केवल ताजे फल के रूप में बल्कि सुखाकर भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके रस का प्रयोग पेय पदार्थों में प्राकृतिक रंजक के रूप में किया जाता है। त्रिपुरा की कुछ जनजातियाँ इससे मिलने वाले रंग का प्रयोग हस्तशिल्प उत्पादों को रंगने के लिए करती हैं। इसके अतिरिक्त फलों तथा बीजों का प्रयोग रक्ताल्पता के उपचार में, जड़ का प्रयोग चर्म रोगों के उपचार में तथा तने के मुलायम भागों का प्रयोग पीलिया के उपचार में किया जाता है।

यह प्रजाति अधिक वर्षा तथा अम्लीय मृदा वाले क्षेत्रों में पायी जाती है तथापि अंडमान व निकोबार द्वीपसमूहों में होने वाले 3 से 4 महीने के सूखे समय के दौरान भी यह बिना किसी समस्या के फलती फूलती है। विगत कई वर्षों में प्राकृतिक व मानवनिर्मित कारणों से इसकी संख्या में काफी कमी आई है। देश के उत्तरपूर्वी राज्य मेघालय में तो इस प्रजाति को गंभीर रूप से लुप्तप्राय की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। अंडमान व निकोबार द्वीपों में इसकी संरक्षण स्थिति का अध्ययन नहीं किया गया है, परंतु यह निश्चित रूप से संख्या में कम होती जा रही है।

जिन क्षेत्रों में यह फल पाया जाता है, वहाँ के स्थानीय लोग जिनमें जनजातियाँ भी शामिल हैं, इसे प्रायः जंगलों से एकत्रित करते हैं। अंडमान के स्थानीय बाजारों में मौसमी फल के रूप में इसकी अच्छी माँग है और इसके फल रु. 100-150/किग्रा की दर से बिकते हैं। बीते कुछ समय में कुछ किसानों ने अब इसमें रुचि दिखानी शुरू की है। संस्थान में किए गए प्रारम्भिक अध्ययनों से यह पता चला है कि यह एक फल फसल के रूप में गृहवाटिकाओं में समावेशित की जा सकती है। साथ ही विश्वप्रसिद्ध पर्यटनस्थल होने के कारण इसके विपणन से द्वीपों के किसानों को अच्छा मुनाफा मिलेगा। इस प्रजाति के बहुआयामी उपयोगों को ध्यान में रखते हुए भाकृअनुप - केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पोर्ट ब्लेयर इसके संरक्षण, प्रवर्धन तथा निरूपण के लिए निरंतर प्रयासरत है। संस्थान इस दिशा में सहयोगी विभागों तथा किसानों के साथ मिलकर कदम बढ़ा रहा है। हाल ही में इसके अंकुरण के लिए पूर्वोपचार मानकीकृत किया गया है, जिससे आगामी अध्ययनों में सहायता मिलेगी। नर्सरी में तैयार पौधों को अंडमान द्वीपसमूहों के कई भागों में संरक्षण के लिए रोपित किया गया है।

Prepared by Pooja Bohra and Ajit A. Waman, Division of Horticulture and Forestry, ICAR- Central Island Agricultural Research Institute, Port Blair under DBT- BioCARe Project